

दिग तथा संख्यावाचक पदों का त्रिविध समास

पंच गावों का समाहार इस विश्व में समाहार वाच्य होने पर तद्विनाशक ५६-० पञ्चानां ओर गावो का २९९वां समास हो। पञ्चगाव रूप बनता है। पूर्वपद संख्यावाचक होने से इसका प्रकृत ध्रुव से द्विशु संज्ञा होती है।

द्विशु रेडवचनम् ।

द्विशुवर्षी समाहार प्रकृत स्थात समाहार द्विशु संकार्थवाचक होता है। उदाहरण के लिए समाहार अर्ध में होने के कारण (पञ्चगाव) समाहार द्विशु है, अतः प्रकृत ध्रुव से संकार्थवाचक होने पर एकवचन अविज्ञा से 'सु' होकर (पञ्चगाव 'सु' रूप बनता है।

उत्तर
आव
गार
३
५

रहा करता है। यह एक संज्ञा है।
यह समास है। यह द्विशु रूप है।
का समाहार द्विशु संकार्थवाचक है।
वाच्य होने पर संख्यावाचक होने से
अवचन में 'सु' होकर 'सु' रूप बनता है।
इस प्रकार समास।

दिग् तथा

तद्विनाय विषय, उत्तरपदे च परतः, समाधारे
 च वाच्य, दिक् संज्ञे प्राक्वत् । पूर्वस्था
 शालामांशः - दीवशालः समास कृतः
 दिक्पद ददादशंशामांशः । इति त्रिः सर्वनाम्ना
 वृत्तिभाते पूर्वकावः । आपरशालः । पूर्वशाला
 प्रिमा यस्यैत निपदे बहुव्रीहि कृते प्रिमाशब्द

उत्तरपदे पूर्वप्रोक्ततपुरुषः । तेन शालाशब्द
 आकार उदात्तः । पूर्वशाला प्रियः । दिक् समाधारे
 गत्यन्तार्थिपानात् । संख्यामासा द्वितीय - धर्णा
 भावगामपत्यं भावमातुरः । पञ्च शोको व्यं
 मस्यैति निपदे बहुव्रीहिकृतस्य ल्युक्पदस्य
 विकल्प प्राप्ते । उन्वृतल्युक्पदोक्तपदे -
 निल समास कथनम् ।

उत्तरपदे परे रहते ओ समाधारे वाच्य धर्णे
 परे दिशावाचक ओ संज्ञावाचक सुबन्त
 को समासार्थिकरणे काल सुबन्त के
 साथ समास होता है ओ उष समास को
 वल्युक्तम कहते हैं ।

गौरतद्वितलुकि । गौरान्तान् -
 तल्युक्तमभाट्ये स्मात् समासान्तः, तद्वितलुकि
 पञ्चवधनः । पञ्चानां शर्वा समाधारेः
 तद्वितान्तेत्पत्रोक्तस्य विधेः संख्यापूर्वो
 द्विगुसंज्ञः स्मात् ।

उक्त पूर्व से तद्वितान्ते के
 विषय में, उत्तरपदे परे रहते तन्ना समाधारे
 वाच्य होने पर संख्यावाचक सुबन्त
 को समासार्थिकरणे काल सुबन्त के साथ
 जो समास होता है, इसे द्विगु कहते हैं।
 समाधारे के अर्थ । पञ्चानां शर्वा समाधारेः